४. वादन

४.१ ध्वनियों का परिचय

सूखी फलियाँ (गुलमोहर, बबूल, मूँगफली)

परात, थाली, कटोरी आदि

खाली डिब्बा

- वादन के लिए वाद्य ही होना चाहिए; यह आवश्यक नहीं है। उपलब्ध किसी भी वस्तु पर जब आघात किया जाता है, तब सहजता से ध्वनि की निर्मिति होती है। इस रूप में वादन भी गायन के लिए संगति कर सकता है।

४.२ वाद्यों की पहचान

इकतारा

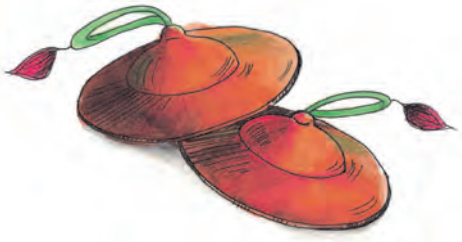

झाँझ

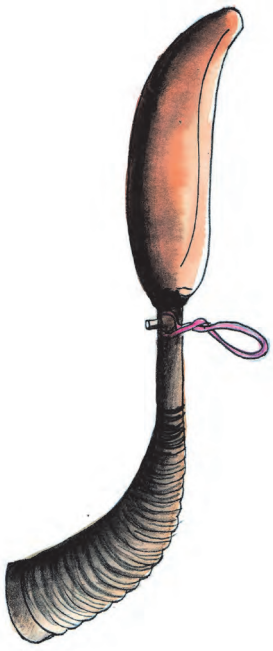

नरसिंघा

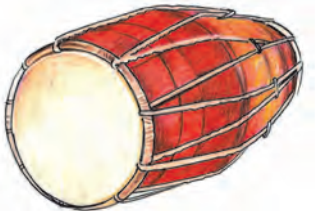

ढोलक

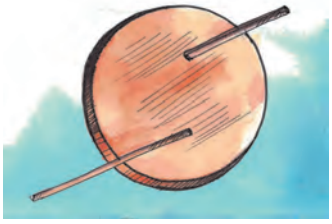

डफ

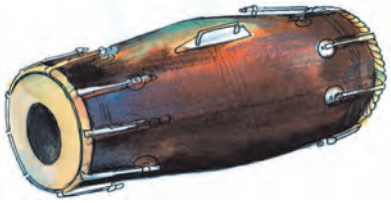

पखावज

मेरी कृति

हाथों की ताली (अभ्यास)

प्रकार १ : १–२, १–२, १–२, १–२

प्रकार २ : १–२, १२३, १–२, १२३

प्रकार ३ : १२३, १–२, १२३, १–२

प्रकार ४ : १२३, १२३, १–२–३

- चित्र में दर्शाए गए वाद्यों का विद्यार्थियों से निरीक्षण करने के लिए कहें और परिसर में सहजता से उपलब्ध होनेवाले वाद्यों का परिचय करवा दें।
- हाथों की तालियों के प्रकार समझाकर बताएँ। प्रत्यक्ष कृति करवा लें।

४.३ अन्य ध्वनियाँ

बैलगाड़ी

घोड़ागाड़ी

ट्रक

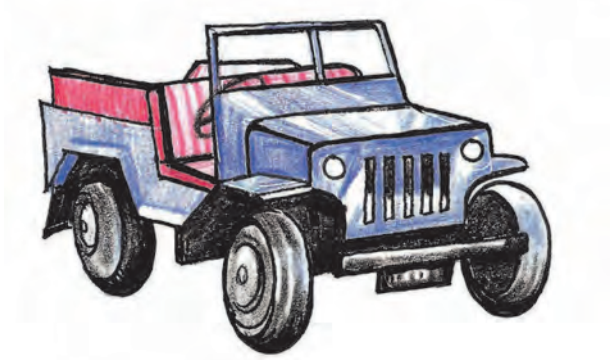

जीप

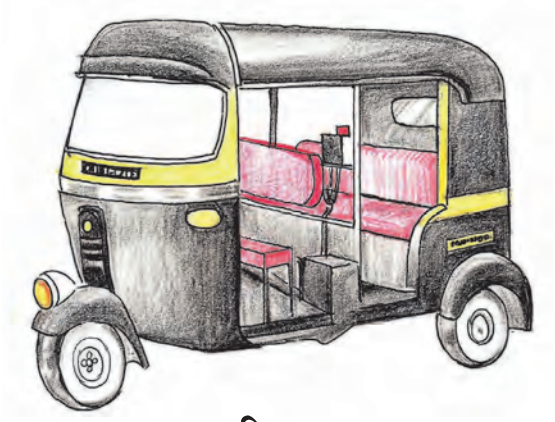

रिक्शा

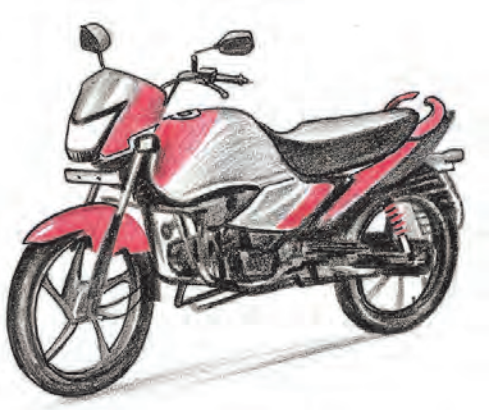

मोटरसाईकिल

◆ परिसर के विविध वाहनों के हॉर्न की ध्वनियों से परिचय करवा दें और वाहनों की ध्वनियों की नकल करवा लें।

४.४ वाद्यों के चित्र चिपकाओ ।

- सहजता से उपलब्ध होनेवाले वाद्यों के चित्र इकट्ठे कर उन्हें चिपकाने लिए कहें और उनके नाम पूछें।

GQQ7NU